हमारे प्यारे पापा

अरुणिमा और आस्था मेहता

हमारे पापा! हमारे प्यारे पापा! हमसे कहा गया लिखो अपने पापा पर। कितना आसान है कहना। पर अपनी भावनाओं को अपने शब्दों में प्रकट करने से मुश्किल कोई काम नहीं, और यह जानकर कि इसे कोई पढ़ेगा, यह तो और भी मुश्किल है। पापा और माँ शायद बच्चे के पहले शब्द होते हैं पर उन शब्दों का अर्थ पता ही, समझाता है। अपने पापा के बारे में जितना कहें, वह शायद कम है और कुछ ना कहें तो हमारे चेहरे की मुस्कान ही बहुत कुछ कह देती है। हमारे पापा हमारे लिए हमारे Super Hero हैं, एक मार्गदर्शक हैं। हम कभी गिरे तो यह नहीं कहा कि क्यों गिरे, क्या कर रहे थे। बस इतना भर कहा कोई बात नहीं, उठो और आगे बढ़ो। मुश्किलें आईं तो कहा—मैं तुम्हारे साथ हूँ, साहस करो और आगे बढ़ो। अक्सर बच्चे Exams के Results से घबराते हैं पर हम तो खुशी से इन्तजार करते थे, इसलिए नहीं कि हम कोई पढ़ाई में तीसमारखाँ थे पर इसलिए क्योंकि हमें पता होता था कि आज तो हम Nathu's में चाट खाने जाएँगे। Result देखे बिना ही हम celebrate कर रहे होते थे। उनका मानना है कि जो तुम्हें करना था वह कर आए, अब क्या चिन्ता करना। वे अक्सर कहते– अपनी निष्ठा से काम करो, अपने प्रति responsible रहो, फल की चिन्ता मत करो। दूसरे बच्चे 96% लाने पर भी डाँट खा रहे होते थे और हमसे ईर्ष्या कर रहे होते थे।

हमारे पापा कोई SantaClaus से कम नहीं हैं। वह सिर्फ हमारे लिए ही नहीं पर सबमें प्यार और खुशियाँ बाँटने में विश्वास रखते हैं। चाहे वो दोस्त हो, रिश्तेदार हो, या कोई अनजाना चेहरा। अच्छा हो या बुरा हो, उससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। कभी हमें लगता कि अरे यह तो अच्छा नहीं, पापा इसकी मदद क्यों कर रहे हैं या फिर मुझे यह अच्छा नहीं लगता तो हम इसकी मदद क्यों करें? पर पापा का मानना है कि इस दुनिया में बहुत कम लोग हैं जो अपने को छोड़कर दूसरे के बारे में सोचते हैं, तो उन जैसे बनो।

सफर सुहाना दुनिया का तथा नामी चेहरे यादगार मुलाकातें पुस्तकों को राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल को भेंट करते हुए आलोक

बुरे वक्त में दुश्मन हो या दोस्त सबकी मदद करनी चाहिए। जब तुम किसी की मदद करो तब जो उसके चेहरे पर मुस्कान आती है, वही असली सुख है। खैर हम तो शायद ही कभी इतने अच्छे बन सकें। हमारे पापा चाहे कितने ही व्यस्त क्यों न हों, पर कभी ऐसा नहीं हुआ कि उन्होंने हमारे लिए वक्त ना निकाला हो। हर School Function पर हमें पता होता था कि हमारे मम्मी-पापा हॉल की पहली सीट पर बैठे होंगे, चाहे हमारा किरदार एक मिनट का ही क्यों न हो, वो ताली जरूर बजाएँगे, चाहे कोई बजाए या ना बजाए। उन्होंने हमें हर चीज के लिए हमेशा ही प्रोत्साहित किया है, चाहे वह नाच, गाना, नाटक, वाद-विवाद प्रतियोगिता खेलकूद कुछ भी।

पापा की एक और सीख जिसने हमारे विचारों को बहुत प्रभावित किया—एक स्वतन्त्र विचारधारा, वह है धर्म निरपेक्षता। पापा का तीन साल के लिए बिहार तबादला हुआ। पहले दिन कक्षा में और बच्चों ने पूछा तुम्हारे नाम से तो लगता है तुम हिन्दू हो, मगर जात कौन-सी ब्राह्मण, भूमिहार

आलोक, अरुणिमा, प्रतिभा, ...

या और कुछ? मेरे पास कोई जवाब नहीं था, क्योंकि हमने कभी जात-पात के बारे में सुना ही नहीं था। अध्यापिका ने भी वही सवाल पूछा, अब भी हमारे पास कोई उत्तर ना था। घर आने पर पापा से पूछा तो उन्होंने कहा कि कल निडर होकर बोलना कि हम हिन्दुस्तानी हैं, हम रहते एक देश में हैं, दिखते एक जैसे हैं, खाते भी एक जैसा ही है तो हम अलग कैसे? हमारे लिए हर धर्म और सब जाति एक है। हम सबको मानते हैं। आज भी मुझसे यह कोई पूछता है, तो हमारा जवाब यही होता है। काश मेरे पापा जैसे सब पापा होते तो हमारा देश दुनिया का, इस विश्व का सबसे प्रगतिशील देश होता।

आज असली मायने में हम पापा का अर्थ समझते हैं, महसूस करते हैं। हमारे पापा हमारे मार्गदर्शक, एक प्यारे दोस्त, गुरु और सबमें खुशियाँ बाँटने वाले SantaClaus हैं। Thank you पापा हमें जिन्दगी के सही मायने समझाने के लिए और एक बड़ा Thank You हमारी माँ के लिए भी जिन्होंने हमारा हाथ हमेशा थामे रखा और पापा के साथ मिलकर जिन्दगी के रास्तों पर सही तरीकों के साथ चलना सिखाया।

ए-18, नवभारत टाइम्स अपार्टमेन्ट्स,
मयूर विहार, फेज-1, नयी दिल्ली-110091